

संगीत का मनोविश्लेषणात्मक पक्ष: अवलोकन

शिवम

रिसर्च स्कॉलर, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र हरियाणा
ईमेल: ssivvm@gmail.com

Reference to this paper
should be made as follows:

शिवम

संगीत का मनोविश्लेषणात्मक पक्ष :
अवलोकन

Artistic Narration 2021,
Vol. XII, No. I,
Article No. 14 pp. 063-065

[https://anubooks.com/
artistic-narration-no-xii-no-
1-jan-june-2021/](https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-1-jan-june-2021/)

सारांश

भारतीय परंपरा के सिद्धांतों में वर्णित पांच ज्ञानेंद्रियों के अलावा मननशील मन भी एक अभ्यंतर ज्ञानेंद्रिय है जो कि अंतःकरण की एक स्पष्ट वेदी है। यह मन अत्यंत सूक्ष्म अवस्था के साथ ही बेहद गतिशील भी है। इसकी यही गतिशीलता किसी वस्तु विशेष के प्रति आकर्षित होने पर चंचलता कही जा सकती है किंतु एक तथ्य यह भी है कि इसी चंचल मन को सभी इंद्रियों का राजा भी माना जाता है। यह मन ही है जो प्रत्येक इंद्रि को नियंत्रित एवं किसी दिशा विशेष की तरफ संचालित करता है। अन्य शब्दों में कहें तो यह कहा जा सकता है कि मन ही मनुष्य के अर्जित एवं संचित ज्ञान कोष का अध्यक्ष है। प्रायः हम जितना भी ज्ञान अर्जित करते हैं यह मन उन सब क्रियाओं एवं अवस्थाओं का काल्पनिक चित्र बनाता है और अपने ज्ञान कोषागार में संचित करता चलता है।

अतः हमारे अनुभवों, तर्कों, भावों, मनोविकारों एवं हमारी कल्पनाओं, स्मृतियों व भावनाओं के कभी न समाप्त होने वाले जीवित चित्र हमारी ज्ञान निधि में संचित होते रहते हैं।

मुख्य शब्द : सिद्धांत, पांच ज्ञानेंद्रि, मननशील, ज्ञानकोश, ज्ञाननिधि।

सारांश

संगीत का प्रभाव मानसिक विकास के सभी पक्षों एवं अंगों पर पड़ता है। मनोविज्ञान के अंदर मन की किसी भी प्रकार की क्रियाओं तथा उसके व्यवहार का अध्ययन किया जाता है और संगीत का मन से बेहद घनिष्ठ संबंध भी है। संगीत के प्रयोग द्वारा मस्तिष्क पर पड़ने वाले अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभावों से मनुष्य में होने वाले परिवर्तनों तथा मानसिक ग्रंथियों को यथावस्था में लाने और रोग के उपचार के रूप में संगीत का वृहद प्रयोग आदि भी मनोविश्लेषणात्मक पक्ष का ही एक अन्य रूप है। भारत की तुलना में पाश्चात्य देशों में इस क्षेत्र में काफी कार्य हुआ। "फिजियोलॉजी ऑफ म्यूजिक" के रचयिता सिशोर ने अपनी पुस्तक में संगीत के विषय को मनोवैज्ञानिक भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है। मनुष्य के मस्तिष्क से संबंधित सभी प्रकार के प्राकृतिक और अर्जित ज्ञान और उसकी क्रिया प्रणाली तथा अनुभूति यह सभी मनोविज्ञान के अंतर्गत आती है। संगीत के मनोविज्ञान का अन्य क्षेत्र संगीत चिकित्सा भी है जो काफी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। संगीत का प्रभाव ना केवल मनुष्य अपितु जानवरों पर भी पड़ता है। यह कहा जाता है कि राग तोड़ी सुनने पर जंगली हिरण झूमने लगता है तथा गाय बांसुरी सुनने पर स्वयं ही दुग्ध वर्षा करने लगती है। मस्तिष्क रोगों से ग्रसित व्यक्ति एवं अल्प बुद्धि वाले व्यक्तियों के रोगात्मक निदान एवं बौद्धिक उन्नति में संगीत के द्वारा कई प्रयोग किए जा रहे हैं तथा कई प्रयोगों में सफलता भी प्राप्त हुई है।

मनोविज्ञान की सभी शाखाओं का संबंध कहीं ना कहीं संगीत से स्थापित हो ही जाता है। संगीत द्वारा दिव्य चेतना की प्राप्ति आत्मा परमात्मा के एकात्मकता का अनुभव करते हुए लौकिक अलौकिक आनंद की प्राप्ति तथा आत्म चेतना से संबंध स्थापित होता है जो बिना संगीत के कहीं ना कहीं असंभव प्रतीत होता है। गायन वादन करते समय संगीत के सभी घटक एक दूसरे से इस प्रकार मिलकर ऐसा प्रभाव उत्पन्न करते हैं जो ना केवल सामान्य रूप में बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप में भी अपना वंचित प्रभाव उत्पन्न करते हैं। जिस प्रकार ताल अपनी ही एक लय में चलती है, जिसमें एक अनुशासन की भावना अंतर्निहित होती है। जब उसका प्रयोग मानव द्वारा किया जाता है तो उसका प्रभाव भी मानव पर अनुशासन की भावना विकसित करने के रूप में पड़ता है।

संगीत के गायनदृवादन एवं श्रवण से मानव के विचार पवित्र हो जाते हैं और आत्मविश्वास को भी सुदृढ़ करने में काफी सहायता मिलती है। इसी प्रकार समूह गायन एवं समूह वादन में अन्य व्यक्तियों के साथ तालमेल एवं भाईचारा बढ़ाने में मदद मिलती है। इस प्रकार समूह में एक दूसरे के प्रति सद्भावना, सहयोगी भाव एवं प्रेम की भावना में भी बढ़ोतरी होती है जो संगीत के मनोवैज्ञानिक पक्ष को संपूर्ण रूप में उजागर करती है।

जिस प्रकार हमारे संगीत की गायन बैलियों में राग विशेष का वर्णन, उसकी प्रकृति एवं स्वभाव के आधार पर होता है तथा राग विशेष का संबंध किसी ना किसी मौसम या त्यौहार विशेष से भी होता है। तो ऐसे में यह स्वाभाविक जान नहीं पड़ता की मनुष्य जब इनका प्रयोग करें तो उस पर इसका प्रभाव ना पड़े?

इसी प्रकार लयों के प्रभाव को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। संगीत में प्रायः तीन लय प्रयोग में आती हैं।

1. विलम्बित लय
2. मध्य लय
3. द्रुत लय

इन्हीं लयों का संबंध विभिन्न प्रकार के रसों से भी होता है तथा रस का मनोवैज्ञानिक प्रभाव इतना है कि कहीं ना कहीं संपूर्ण मानव व्यवहार इन्हीं पर आश्रित करता है।

करुण रस के साथ मुख्यतः विलंबित लय का प्रयोग किया जाता है।

हास्य और श्रृंगार के लिए मध्य लय का प्रयोग देखा जाता है।

इसी प्रकार द्रुत लय को वीर, रौद्र, अद्भुत और वीभत्स रसों के साथ जोड़कर देखा जाता है।

संगीत के मनोविज्ञान पर विचार करते समय जितना विचार संगीत एवं संगीतज्ञ पर किया जाता है उतना ही विचार संगीत का रस ग्रहण करने वाले श्रोता पर भी करना चाहिए। जब तक संगीत के सार्थक प्रयोग द्वारा श्रोता के हार्दिक भाव जागृत नहीं होंगे तब तक वह इस कला का आस्वादन करने में असमर्थ रहेगा। अतः यह भी जरूरी है कि श्रोता सहृदय हो।

निष्कर्ष :

अतः निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं की संगीत के साथ संबंधित व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के अपेक्षाकृत अधिक प्रश्न उचित और क्रोध से दूर रहता है संगीत कला नीरज जीवन को सरस बनाकर अपना अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करती है संगीत के द्वारा कोई भी व्यक्ति विशेष अपने मन के भावों को किसी अन्य व्यक्ति को सरलता पूर्वक समझा सकता है तथा अन्य व्यक्तियों के भावों को भी उसी प्रकार समझ सकता है। जब कोई व्यक्ति किन्हीं कारणों एवं परिस्थितियों को लेकर दुखी होता है तो उसका हृदय उन्हीं परिस्थितियों के अनुसार गीत गाकर शांति का अनुभव करता है। संगीत के प्रभाव से नरभक्षी पशु एवं विषधर जीव भी अपने स्वभाव को भूल जाते हैं। उपरोक्त तथ्यों एवं मतों के आधार पर हम यह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं की संगीत का मनोविज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की कोई अन्य विज्ञान।

संदर्भ ग्रंथ

1. https://hi.vvikipedia.com/wiki/Music_psychology
2. सिशोर द्वारा रचित "फिजियोलॉजी ऑफ म्यूजिक"
3. वसंत द्वारा लिखित "संगीत विशारद"
4. डॉ० अशोक कुमार 'यमन' द्वारा लिखित "संगीत रत्नावली"